International Refereed
& Blind Peer-Reviewed
Multidisciplinary
Research Journal

Vol. 10
Issue 04
Oct.-Nov.-Dec.
2023

ISSN 2348 – 3318

Recent Researches in Social Sciences & Humanities

幸福

www.recentjournals.in
www.wellpress.in

Recent Researches in Social Sciences & Humanities

Issue 4
Vol. 10
Oct.-Nov.-Dec.
2023

ISSN 2348–3318

International Refereed & Blind Peer Reviewed
Multidisciplinary Research Journal

Publishing Date
Dec. 15, 2023

CONTENTS

S.No.	Titles & Author/s	Pages
13.	समान नागरिक संहिता और मानवाधिकार DOI: 10.5281/zenodo.10445070 *अखिलेश कुमार यादव*	75-77
14.	पंचतंत्र में काम मनोविज्ञान DOI: 10.5281/zenodo.10445081 *रामकेश पाण्डेय*	78-83
15.	आधुनिक परिवहन माध्यमों का गढ़वाल हिमालयी अर्थव्यवस्था में योगदान DOI: 10.5281/zenodo.10445088 *मालचन्द सिंह नेगी*	84-87
16.	मानव जीवन में योग का महत्व एवं उपयोगिता DOI : 10.5281/zenodo.10445106 *ललित मोहन*	88-90
17.	The Constitution- Freedoms and Rights DOI: 10.5281/zenodo.10445112 *Shritu Anand*	91-94

The views and ideas expressed in the articles are the exclusive opinions of the authors and have nothing to do with the opinions of Recent Educational & Psychological Researches. Publisher and Editorial Board do not own any responsibility. Authors are liable for any copyright clearance, Factual inaccuracies and views expressed in their papers.

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal
Issue: 4 | Vol.: 10 | Oct.-Nov.-Dec.-2023 | Pages: 78-83 | RRSSH | ISSN: 2348 - 3318 |
DOI: 10.5281/zenodo.10445081, Similarity/Plagiarism: 0%

पंचतंत्र में काम मनोविज्ञान

रामकेश पाण्डेय
प्राचार्य, आदित्य प्रकाश जालान टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, कुदलुम, नगड़ी, राँची
ईमेल : drrkpandey9@gmail.com, दूरभाष: 8409033840

Received : 19/11/2023 *1st BPR* : 25/11/2023 *2nd BPR* : 01/12/2023 *Accepted* : 07/12/2023

Abstract

भारतीय मनोवैज्ञानिक चिंतन में मूल प्रवृत्तियों का प्रचलन कामशक्ति के कारण माना गया है। वास्तव में कोई भी प्रवृत्ति राग के कारण ही होती है और राग का दूसरा नाम है 'काम'। काम से ही वासनाओं की उत्पत्ति होती है। अथर्ववेद में काम शब्द विकार के साथ इच्छा और कामना का भी वाचक है। काम मन का प्रथम बीज कहा गया है, यह अत्यधिक बलवान और शत्रु को मारने वाला है। वाणी इसकी पुत्री है। इसे न तो वायु ही पकड़ सकती है, न आग, न सूर्य और न ही चन्द्रमा ही। काम के सर्वविध वर्णन के साथ पंचतंत्र ने इसके निषेध व हानि को बताते हुये संरक्षोपायों से भी अवगत कराया है। वह 'नातिप्रसंगः प्रभदासु' से जागृत करता है कि नारियों में अधिक आसक्ति नहीं रखनी चाहिए।

Key words: पंचतंत्र, काम–मनोविज्ञान।

काम–मनोविज्ञान

कामप्रवृत्ति मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। कामप्रवृत्तियों के प्रति प्राचीन दृष्टिकोण काफी स्वस्थ था, किन्तु वर्तमान में इसे समझने के प्रति एक विकृत दृष्टिकोण देखने को मिलता है। हमारे यहां अब भी लोग विद्यालयों में इस शिक्षा के विरोधी हैं, यह दशा केवल हमारे यहां ही नहीं पश्चिमी देशों में भी अभी कुछ समय पहले तक थी।

मानव व्यवहार के नियन्त्रण में काम प्रवृत्तियों की भूमिका को मनोविश्लेषणवादी विचारधारा ने सबसे अधिक महत्त्व दिया है। फ्रायड ने तो इसे सम्पूर्ण मानव व्यवहार का स्रोत तक मान लिया है। फ्रायड की मनोविश्लेषणवादी विचारधारा प्रगतिशील है। इस सैद्धान्तिक विकास के प्रथम चरण (1919 से पूर्व) में फ्रायड ने मानव व्यवहार के संचालन में केवल सुख – सिद्धान्त को ही महत्त्व दिया था। 208 उसके अनुसार सारा मानव व्यवहार दो उद्देश्यों से होता है, आत्मसंरक्षण तथा जाति संरक्षण। आत्म संरक्षण को उसने अहम् मूल प्रवृत्ति (ego instinct) तथा जाति–संरक्षण को काम मूल प्रवृत्ति (sexual instinct) की संज्ञा दी तथा इस कामप्रवृत्ति को संचालित करने वाली ऊर्जा को कामवासना (libido) का नाम दिया। इन दोनों प्रवृत्तियों का उद्देश्य शरीर को सुख पहुंचाना है। कामप्रवृत्तियां अधिक नम्य (flexible) हैं तथा इनका उदात्तीकरण (Sublimation) किया जा सकता है।

फ्रायड आत्ममोह (narcissism) में स्नेह (मोह) को काम–वासना या काम–प्रवृत्ति के अन्तर्गत मानता था। पर उसके समक्ष समस्या थी कि यह तत्त्व अहम्वर्द्धक है, इसलिये इसे अहम् प्रवृत्ति के अन्तर्गत आना चाहिये। दूसरी समस्या परपीड़नरति (sadism) से सम्बन्धित थी, इसमें काम (libido) तत्त्व तो स्पष्ट है परन्तु इसके शत्रुता पक्ष (hostile aspect) का काम प्रेरणा के साथ किस प्रकार समाधान कराया जाय। इस कारण फ्रायड ने 1915 से 1926 के मध्य अपने सिद्धान्तों में परिवर्तन किया।

लिबिडो काममूला, स्वार्थमूला तथा अभिव्यक्ति के लिये उत्सुक रहने वाली है, अतः इसकी अभिव्यक्ति पर चेतन का सदैव नियन्त्रण रहता है। इसकी परिधि में नर–नारी का लैंगिक आकर्षण ही नहीं वात्सल्य, स्नेह, सहानुभूति आदि भाव भी सम्मिलित हैं, यह शक्ति जन्म से ही सक्रिय रहती है। प्रारम्भ में बालक की कामभावना शरीर के किसी विशिष्ट स्थान पर केन्द्रित नहीं रहती, किन्तु कुछ ही दिनों बाद शरीर के विशिष्ट स्थानों पर केन्द्रित हो जाती है। फ्रायड के अनुसार कामप्रवृत्ति के विकास के पांच सोपान हैं। विश्रृंखल, मौखिक, गुदास्थानीय, उपस्थाश्रित तथा जननेन्द्रियावस्था। ये अवस्थायें अपने स्वाभाविक विकास क्रम में स्वस्थ व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं और इनके आस्वाभाविक विकास में व्यक्तित्व का गठन अस्वस्थ होता है।

मनोविश्लेषणवादियों के अनुसार 'लिबिडो' की धारा के मोड़ बहिर्मुखीकरण, अन्तर्मुखीकरण, केन्द्रयण, प्रत्यावर्तन, प्रतिबन्धन और दिशान्तरण है। 'लिबिडो' का बाह्य वस्तुओं की ओर उन्मुख होना विकास की साधारण अवस्था है। दूसरी अवस्था तब प्रारम्भ होती हैं जब लिविडो की धारा बाल विषयों की अपेक्षा आभ्यन्तर की दिशा पकड़ती है। 'लिविडो' का विकास बालक

International Refereed
& Blind Peer-Reviewed
Research Journal

Vol. 12
Issue 04
Oct.-Nov.-Dec.
2023

ISSN 2278- 5949

RECENT EDUCATIONAL & PSYCHOLOGICAL RESEARCHES

幸福

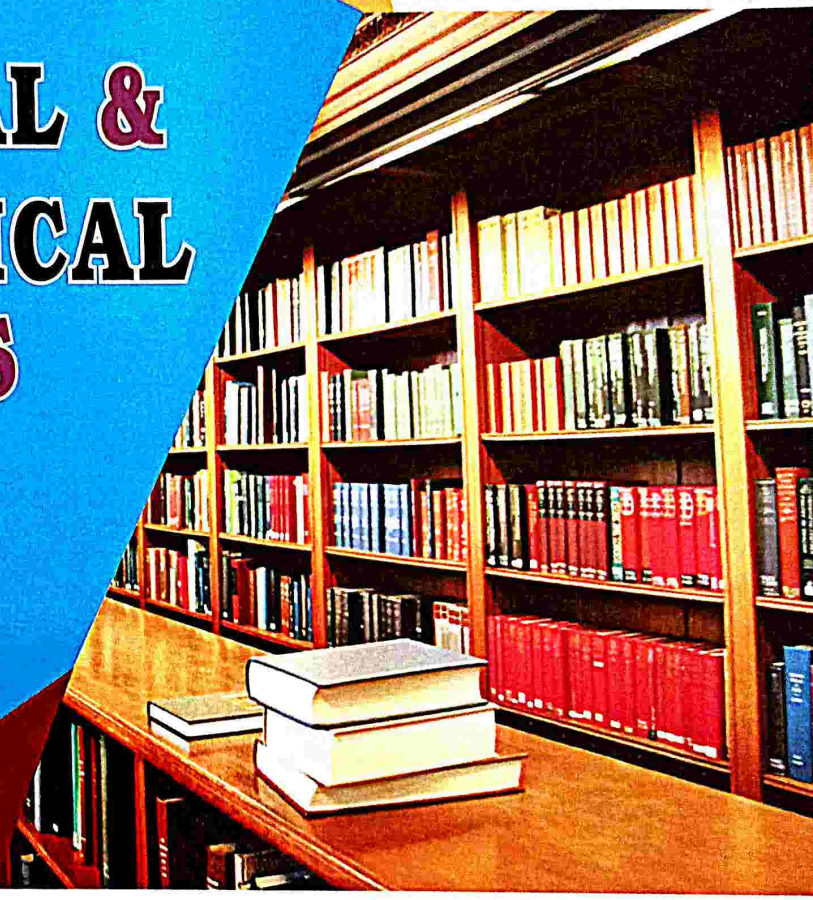

Motivation • Research • Development • Review

ISSN 2278- 5949

www.recentjournals.in
www.wellpress.in

RESEARCH
RECENT EDUCATIONAL & PSYCHOLOGICAL RESEARCHES
Issue 04 Vol. 12
Oct.-Nov.-Dec. 2023
ISSN 2278-5949
International Refereed & Blind Peer Reviewed Research Journal

INDEX

S.No.	Title	Page No.
1.	Effect of Selective Aasana, Pranayam, Dhayan & Mudra Practices on Problem Solving Ability of Secondary Level Student DOI: 10.5281/zenodo.10371861 *Mamta Bhardwaj*	1-4
2.	व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठयक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संवेगाात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन DOI: 10.5281/zenodo.10391773 *राज कमल यादव एवं अरुण कुमार*	5-10
3.	Connecting Happiness and Sustainability to the G20 Agenda DOI: 10.5281/zenodo.10445121 *Archana Singh*	11-14
4.	पंचतंत्र में संवेगात्मक मनोविज्ञान की अवधारणा DOI: 10.5281/zenodo.10445130 *रामकेश पाण्डेय*	15-21
5.	हरियाणा राज्य के जिला व ब्लॉक नूंह स्थित राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय और सीबीएसई उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के बीच मोबाइल की आदत का तुलनात्मक अध्ययन DOI: 10.5281/zenodo.10445140 *गुलशन कुमार*	22-26
6.	प्राथमिक शिक्षा में उपचारात्मक शिक्षणः एक अध्ययन DOI: 10.5281/zenodo.10445148 *मुन्नेश कुमार*	27-31
7.	स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन एवं वर्तमान शैक्षिक प्रतिमान का तुलनात्मक अध्ययन DOI: 10.5281/zenodo.10468683 *संतोष कुमार शर्मा एवं अक्षय अग्रवाल*	32-37
8.	विद्या भारती शिक्षा एक सामाजिक–सांस्कृतिक और आर्थिक घटना के रूप में DOI: 10.5281/zenodo.10468709 *अजय मोहन सेमवाल एवं एस0 सी0 पचौरी*	38-46
9.	Humanistic Approach and Teaching of Science DOI: 10.5281/zenodo.10468767 *Anindya Rastogi & Arun Kumar*	47-52

International Refereed, Blind Peer-Reviewed & Open Access Research Journal
Issue: 04 | Vol.: 12 | Oct.-Nov.-Dec. 2023 | Pages: 15-21 | REPR | ISSN: 2278 - 5949 |
DOI: 10.5281/zenodo.10445130, Similarity / Plagiarism: 9 %

पंचतंत्र में संवेगात्मक मनोविज्ञान की अवधारणा

रामकेश पाण्डेय
प्राचार्य, आदित्य प्रकाश जालान टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, कुदलुम, नगड़ी, राँची
ईमेल : drrkpandey9@gmail.com, दूरभाष : 8409033840

Received : 22/11/2023 *1st BPR* : 26/11/2023 *2nd BPR* : 01/12/2023 *Accepted* : 08/12/2023

Abstract

संवेग व्यवहार का वह प्रतिमान है जो अन्तरंग तथा शरीर के अन्य भागों में घटित होता है। बालक के शिक्षण में उसकी संवेगात्मक स्थिति का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। यदि किसी प्रखर बुद्धि बालक की संवेगात्मक स्थिति अच्छी नहीं है तो उसकी अपेक्षित शैक्षिक प्रगति नहीं हो सकती। इसलिए माता–पिता, शिक्षक आदि को इस संदर्भ में सतत् जागरूक रहने की आवश्यकता है। Gates के अनुसार मानसिक तनाव उत्पन्न वाले संवेग बालक की मानसिक क्षमताओं को कुंठित कर देते हैं, किन्तु यह प्रभाव एक तरफा नहीं है। बालक की संवेगात्मक स्थिति उसके अपने वातावरण से स्वस्थ समायोजन करने में सफलता या असफलता तथा इनसे उत्पन्न अभिवृत्तियाँ तथा भावनायें उसके शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालती है। विद्वानों ने एक मत से यह स्वीकार किया है कि यद्यपि बालक में ज्ञान तथा अवबोध का अभाव होता है किन्तु जीवन के आरंभ से ही वह संवेगों का प्रदर्शन करता है। फ्रायड ने तो यहाँ तक कहा है कि गर्भावस्था में भी बालक में भावनाऐं होती हैं।

Key words: पंचतंत्र, संवेग, मनोविज्ञान।

मनोवैज्ञानिक संवेग (EMOTIONS)

संवेगात्मक अवस्था तभी आती है। जब कोई बाह्य या आन्तरिक उद्दीपक उत्तेजक स्थिति के रूप में देखा या सोचा जाता हैं। बिना किसी प्रत्यक्ष उत्तेजक स्थिति या उसकी संभावित कल्पना के संवेग उत्पन्न नहीं हो सकता कुछ व्यक्ति जन्म से ही संवेगी होते हैं जबकि कुछ में संवेग शीघ्र उत्पन्न नहीं होते। संवेग एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें सारा शरीर कई प्रकार से भाग लेता हैं। जेम्स एंड लैंग के सिद्धान्तो में इन आन्तिरिक शारीरिक क्रियाओं को इतना महत्त्व दिया गया है कि उनके अनुसार यदि ये क्रियायें ना हो तो कोई संवेग नहीं होगा। केनन के अनुसार संवेग व्यक्ति को अपने वातावरण के साथ, विशेषकर जब वह आपात काल में होता है, अधिक अच्छा समायोजन करने का दृढ़ प्रबन्ध है।

संवेगो के स्वरूप तथा संवेदन शक्ति मे अनेक प्रकार की विविधता होती है संवेग नकारात्मक सकारात्मक स्थायी तथा क्षणिक, तीव्र तथा शान्तियुक्त होते हैं। संवेगो में स्नेह हर्ष प्रसन्नता जैसी क्रियायें सकारात्मक होती हैं। नफरत भय जैसी क्रियायें नकारात्मक संवेग हैं। इन संवेगो से स्वयं या दूसरों को क्षति या विनाश की संभावना हो सकती है। जेम्स लिखता है कि– "My theory-----is that the bodly changes follow directly the perception of the exciting fact, and that our feeling of the same changes as the occur in the emotion."

कुछ अन्य विद्वानों के मत से "संवेग व्यवहार का वह प्रतिमान है जो अन्तरंग तथा शरीर के अन्य भागों में घटित होता है।" अथवा "Emotion is a Bodily patbern which is preceded either by psychological event are subsequent mental events" बालक के शिक्षण में उसकी संवेगात्मक स्थिति का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। यदि किसी प्रखर बुद्धि बालक की संवेगात्मक स्थिति अच्छी नहीं है तो उसकी अपेक्षित शैक्षिक प्रगति नहीं हो सकती। इसीलिए माता पिता, शिक्षक आदि को इस संदर्भ में सतत् जागरूक रहने की आवश्यकता है। Gates के अनुसार मानसिक तनाव उत्पन्न करने वाले संवेग बालक की मानसिक क्षमताओं को कुंठित कर देते हैं, किन्तु यह प्रभाव एक तरफा नहीं है। बालक की संवेगात्मक स्थिति उसके अपने वातावरण से स्वस्थ समायोजन करने में सफलता या असफलता तथा इनसे उत्पन्न अभिवृत्तियाँ तथा भावनायें उसके शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालती है। विद्वानों ने एक मत से यह स्वीकार किया है कि यद्यपि बालक में ज्ञान तथा अवबोध का अभाव होता है किन्तु जीवन के आरम्भ से ही वह संवेगो का प्रदर्शन करता है। फ्रायड ने तो यहाँ तक कहा है कि गर्भावस्था में भी बालक में भावनाऐं होती हैं। वॉटसन ने इसकी पुष्टि के लिए प्रयोग भी किये थे।

अहंकार

भारतीय मनोविज्ञान में अहंकार का नाम (प्रत्यग्भान) स्वीकार किया गया है। प्रत्यक् नाम आत्मा का है। आत्मा का मान अन्तःकरण में होता है। बालक मानसिक स्वास्थ्य का विशेष महत्त्व है।' मस्तिष्क के बाहरी तत्त्व जिसे 'सिरिब्रल कांटेक्स'

ISSN 2582-1016, July-December 2023, 1
I2OR Impact Factor: 2.650
General Impact Factor: 2.1923

ISSN: 2582-1016 **July- December 2023**

ईशान् जर्नल ऑफ रिसर्च, नालेज एण्ड प्रूडेंस

ISHAN JOURNAL OF RESEARCH KNOWLEDGE & PRUDENCE
(A Peer-Reviewed Multidisciplinary International Research Journal)

अंक 10 (वर्ष 5) (मार्गशीर्ष–पौष) **Volume X (Year 5)** **Margashirsha-Paush**

कलियुगाब्द 5125, विक्रम संवत् 2080, ईसवी सन् 2023

Kali Yugābda 5125, Vikram Samvat 2080, i.e., CE 2023

Chief Patron
Dr. Balmukund Panday
National Organizing Secretary in Akhil Bhartiya Itihas Sankalan Yojana, New Delhi

Patron
Professor (Dr.) Alok Tripathi
Additional Director General, Archaeological Survey of India, New Delhi

ISSN 2582-1016, July-December 2023, 7
I2OR Impact Factor: 2.650
General Impact Factor: 2.1923

ISHAN JOURNAL OF RESEARCH KNOWLEDGE & PRUDENCE

Volume X (5) Margashirsha-Paush
Kali Yugābda 5125, Vikram Samvat 2080, i.e., CE 2023

अनुक्रमणिका

1.	वैदिककालीन उद्यमिता परिवेश (गिरिन्द्र मोहन ठाकुर, नारायण पालीवाल)	8
2.	हिन्दी व्याकरण, शुद्ध लेखन एवं वाचन कौशल में विकसित स्व–अधिगम सामग्री के प्रति प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया का अध्ययन (कमलेंद्र नाथ त्रिपाठी)	13
3.	श्रीमद्भगवद् गीता में वर्णित जीवन मूल्यों की शिक्षा में प्रासंगिकता : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के संदर्भ में (वागीश दूबे)	21
4.	प्रतापगढ़ की मलिन बस्तियों का अध्ययन (अनामिका सिंह)	28
5.	किशोर अपराध की समस्या का समाधान (अनामिका सिंह)	33
6.	IMPACT OF EMOTIONAL MATURITY ON EDUCATIONAL ACHIEVEMENT OF HIGHER SECONDARY SCHOOL STUDENTS IN RANCHI DISTRICT (Mrs. Dazy Lakra)	46
7.	व्यक्तित्व (PERSONALITY) (डॉ. रामकेश पाण्डेय)	63

ISSN 2582-1016, July-December 2023, 64
I2OR Impact Factor: 2.650
General Impact Factor: 2.1923

व्यक्तित्व (PERSONALITY)

डॉ. रामकेश पाण्डेय
प्राचार्य,
आदित्य प्रकाश जालान टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, कुदलुम, राँची

सारांश

व्यक्तित्व समाज से पृथक् या बाहर नहीं हो सकता है। अकेला व्यक्ति व्यक्तित्व नहीं बनाता। व्यक्तित्व बनता है उन सामाजिक परस्परिक दशाओं से जिनमें दो या दो से अधिक व्यक्ति परस्पर क्रिया करते हों। व्यक्तित्व के निर्माण में परिवेश की महती भूमिका होती है। व्यक्तित्व का निर्माण अत्यंत कठिनता से होता है। मनुष्य को स्वयं को सुप्रकाशित करने के लिए पौरूष करना पड़ता है। जब तक पुरूष पौरूष नहीं करता तब तक पराया भाग मिलना बहुत कठिन है। पंचतंत्र में व्यक्तित्व को कथाओं के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। पंचतंत्र के लेखक विष्णु शर्मा का व्यक्ति स्वयं में प्रभावी दिखाया गया है। उनकी दृढ़ता संकल्पशक्ति, स्पष्टवादिता ग्रन्थ के प्रारंभ में ही प्रकट हो जाती है। निर्भीक व्यक्तित्व होना चाहिए। सम्पत्ति या विपत्ति में जो समान रहता है उसी का व्यक्तित्व महान होता है। संकट में फंसकर भी जिसकी बुद्धि क्षय को प्राप्त नहीं होती, दृढ़ता रहती है, प्रयत्नशीलता तथा धैर्य रहता है ऐसा व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के प्रभाववश विपत्ति पर निःसंदेह विजय प्राप्त करता है।

व्यक्तित्व शब्द का अंग्रेजी पर्याय 'पर्सनालिटी' शब्द लैटिन भाषा के शब्द पर्सोना (persona) से बना है, जिसका अर्थ है मुखौटा (Mask) इस तरह व्यक्तित्व से तात्पर्य व्यक्ति के बाह्य गुणों से लगाया जाता है। मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि में व्यक्तित्व एक अत्यन्त जटिल, भ्रामक तथा अस्पष्ट प्रत्यय है। इसकी यथार्थ एवं स्पष्ट परिभाषा देना न केवल एक कठिन बल्कि लगभग असंभव कार्य है। मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के प्रत्यय को अपने नजरिये से देखा तथा उसी के अनुरूप परिभाषित किया है–

व्यक्तित्व गुणों का समन्वित रूप है। personality is an intergrated patteren of traits.

"Personality refers to the whole behavioural pattern of an individual…. To the totality of its characteristics."

"Personality is the dynamic organization within the individual of those psycho-physical systems that determine his unique adjustment to his environment."

आलपोर्ट के अनुसार व्यक्तित्व की प्रकृति संगठनात्मक तथा गत्यात्मक होती है। इसमें मनो–शारीरिक गुण समाहित हैं तथा यह वातावरण के साथ समायोजन से अभिलक्षित होता है। मनोवैज्ञानिकों ने सैद्धांतिक संदर्भ व आधार का निर्माण करके मानव व्यवहार की व्याख्या स्पष्ट

MAH/MUL/ 03051/2012 **ISSN :2319 9318**

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

July To Sept. 2023
Issue 47, Vol-10

Date of Publication
01 Sept. 2023

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

13) मराठवाड्यातील गारपीट आपत्तीमुळे कृषी पिकांचे झालेले नुकसान: एक भौगोलिक ...
प्रा.डॉ. अनिल चौधरी, जिल्हा जालना ||63

14) शिवछत्रपतीचे अष्टप्रधान मंडळ : एक अभ्यास
पत्तेवार मंगला बाबाराव, डॉ. जाधव दत्ता, माहूर ||65

15) जीवनव्यवहारे श्रीमद्भगवद्गीतायां त्रैविध्यम
प्रितेशकुमार बी. पटेल, गोधरा, गुजरात ||69

16) अमर बलिदानी सिद्धो–कान्हू
रेणु कुमारी, हजारीबाग ||71

17) पूर्णकलश का मांगलिक महत्त्व : एक ऐतिहासिक अध्ययन
संदीप कुमार, हजारीबाग ||73

18) दलित वैचारिकी की सैद्धान्तिकी
डॉ. बी.एल. आर्य, भीलवाड़ा (राजस्थान) ||75

19) राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में औषधीय पादपों का भौगोलिक अध्ययन
डॉ. गौरव कुमार जैन, अश्विनी कुलदीप, जोधपुर (राज.) ||82

20) महापुराणों में भगवद भक्ति और धर्म
डॉ.उर्मिलाबहन छत्रसिंह बारीआ, जिला – गोधरा, राज्य – गुजरात ||88

21) जयप्रकाश कर्दम के कथा – साहित्य में चित्रित दलित चेतना
शांति सुमन दीपांकर, अमरकंटक (मध्य प्रदेश) ||90

22) पर्यावरण एवं पर्यावरण नीतियाँ
डॉ. मलखान सिंह, विदिशा (म.प्र.) ||94

23) उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर, शैक्षिक उपलब्धि ...
हरीश कुमार पाण्डेय, डॉ० प्रमोद कुमार पाण्डेय, जौनपुर (उ०प्र०) ||96

24) असमीया में क्रिया रूपसाधक प्रत्यय
सुरभि चुतिया, वर्धा (महाराष्ट्र) ||102

25) माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों के अधिगम एवं विद्यालयी समायोजन के ...
नीमा बिष्ट, मुकेश वर्मा, रूद्रपुर (उत्तराखण्ड) ||107

www.vidyawarta.com/03 – http://www.printingarea.blogspot.com

पर आता है। अकेले भारत में लगभग ४५००० पेड़—पौधे तथा ८१००० जीव—जन्तुओं की प्रजातियाँ पाई जाती है। यह अधिनियम जैव विविधता संरक्षण सुनिश्चित करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है।

८. अन्य अधिनियम—

उपर्युक्त अधिनियमों के अलावा पर्यावरण संरक्षण के लिए समय—समय पर अन्य कानूनों का निर्माण किया गया है, जो निम्नानुसार हैं—

(i) राष्ट्रीय जलनीति, २००२ ।

(ii) राष्ट्रीय पर्यावरण नीति, २००४ ।

(iii) वन अधिकार अधिनियम, २००६ ।

(iv) गंगा प्रदूषण १९८८, पर्यावरण जागरुकता मामला १९९२ दिल्ली वाहन प्रदूषण मामला, १९८४, ताजमहल संरक्षण १९९७ आदि।

निष्कर्ष —

उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट ही कि वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण से मानव, जीव—जन्तुओं एवं प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण आवश्यक है। इसके लिये राज्य सरकारें तथा केन्द्र सरकार विभिन्न प्रकार के कानून बनाकर इस दिशा में कार्य कर रही हैं। मानव को जागरुक भी किया जा रहा है जिसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। भारत सरकार का स्वच्छता मिशन इसका ज्वलंत उदाहरण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची—

१. पर्यावरण अध्ययन, डॉ.विजय कुमार तिवारी, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

२. पर्यावरण तथा प्रदूषण— डॉ.अरुण एवं चन्द्रलेखा रघुवंशी म.प्र.हि.ग्र. अकादमी भोपाल

❑❑❑

23

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर, शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक—आर्थिक स्थिति का वर्ग के आधार पर अध्ययन

हरीश कुमार पाण्डेय
शोध अध्येता,
नागरिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंघई, जौनपुर (उ०प्र०)

डॉ० प्रमोद कुमार पाण्डेय
विभागाध्यक्ष (बी०एड०),
नागरिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंघई, जौनपुर (उ०प्र०)

सारांश

अध्ययनकर्त्ता द्वारा प्रस्तुत समस्या के अन्तर्गत उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर, शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक—आर्थिक स्थिति का वर्ग के आधार पर अध्ययन किया गया है। समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्त्ता ने वर्णनात्मक शोध की सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत अध्ययन में बलिया जनपद के बांसडीह तहसील में स्थित माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित कक्षा—११वीं के विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है। न्यादर्श के चयन में यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में न्यादर्श के अन्तर्गत बलिया जनपद के बांसडीह तहसील के माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की सूची तैयार उसमें से कुल २० विद्यालयों का चयन लाटरी विधि से किया गया तत्पश्चात् उन विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का चयन चयन पुंज विधि द्वारा किया गया है। अध्ययन में कुल ११५० विद्यार्थियों का चयन कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं कृषि वर्ग के आधार पर किया गया है।

UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 6.0 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 10, No. 6 **June, 2023**

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

Dr. H.L. Sharma
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

Dr. Hans Prabhakar Ravidas
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh
email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

▶	वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नई तकनीकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : उपयोगिता एवं चुनौतियां **धर्मेन्द्र कुमार**	207-210
▶	स्वतंत्रता के बाद भारत की प्रगति और विकास **संध्या रानी**	211-216
▶	उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर, शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति का वर्ग के आधार पर अध्ययन **हरीश कुमार पाण्डेय एवं डॉ0 प्रमोद कुमार पाण्डेय**	217-222

UGC Approved Journal No. 48416 *Impact Factor : 6.0*
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 10, No. 6, June, 2023 *ISSN : 2393-8358*

लिंग एवं क्षेत्र के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति का सहसंबंधात्मक अध्ययन

हरीश कुमार पाण्डेय
शोध अध्येता, नागरिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंघई, जौनपुर (उ0प्र0)
डॉ0 प्रमोद कुमार पाण्डेय
विभागाध्यक्ष (बी0एड0), नागरिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंघई, जौनपुर (उ0प्र0)

सारांश

समस्या कथन के अन्तर्गत लिंग एवं क्षेत्र के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति का सहसंबंधात्मक अध्ययन किया गया है। समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्त्ता ने वर्णनात्मक शोध की सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत अध्ययन में बलिया जनपद के बांसडीह तहसील में स्थित माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित कक्षा–11वीं के विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है। न्यादर्श के चयन में यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में न्यादर्श के अन्तर्गत बलिया जनपद के बांसडीह तहसील के माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की सूची तैयार उसमें से कुल 20 विद्यालयों का चयन लाटरी विधि से किया गया तत्पश्चात् उन विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का चयन चयन पुंज विधि द्वारा किया गया है। अध्ययन में कुल 1150 विद्यार्थियों का चयन लिंग एवं क्षेत्र के आधार पर किया गया है। अध्ययन में प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करने के पश्चात् पाया गया कि– लिंग के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के सम्पूर्ण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सार्थक एवं धनात्मक सहसम्बन्ध है जबकि छात्र एवं छात्राओं का अलग–अलग अध्ययन करने पर सम्बन्ध नहीं है। क्षेत्र के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सार्थक एवं धनात्मक सहसम्बन्ध है।

मुख्य शब्द : माध्यमिक स्तर, छात्र–छात्राएँ, शहरी, ग्रामीण, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, शैक्षिक उपलब्धि, सहसंबंध।

प्रस्तावना–

सामाजिक दृष्टिकोण से शिक्षा समाज की संस्कृति विशेष को हस्तान्तरित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है, और समाज के अन्तर्गत ऐसी दशाओं को निर्मित करता है जिससे समाज के लोगों में अस्तित्व बोध का विकास होता रहे। इस प्रकार शिक्षा किसी न किसी रूप में व्यक्ति की वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक दशा आदि को प्रभावित करने का प्रयास करती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसका अभिन्न अंग भी। समाज और व्यक्ति का वही सम्बन्ध है जो एक पूर्ण इकाई और उसके एक टुकड़े का। कोई मनुष्य जो समाजरूपी मशीन की एक सक्रिय और उपयोगी पूंजी है उससे अलग होकर मूल्यरहित हो जाता है। अतः मनुष्य का मूल्य उसी समय तक है, जब तक वह समाज से सम्बद्ध है। समाज से जुड़े रहकर की वह भली प्रकार से अपना विकास तथा अपनी उन्नति कर सकता है। व्यक्ति के विकास में समाज का सहयोग रहता है और उसके अभाव में वह उन्नति नहीं कर सकता। मनुष्य को अपने हित के साथ–साथ समाज के हितों का भी ध्यान रखना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर सामाजिक हितों के लिए, निजी हितों के बलिदान के लिए तत्पर रहना चाहिए। इसी प्रकार व्यक्तियों के अभाव में समाज भी अपूर्ण रहेगा और यदि समाज के मनुष्यों का उचित विकास नहीं हुआ तो समाज का स्तर गिर जायेगा और सामाजिक हितों को दृष्टि में रखकर व्यक्ति का विकास होना चाहिए और यह तभी सम्भव होगा जब उसमें शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होगा।

सामाजिक–आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं का निर्धारित करने वाले कारकों में से एक है जिसका प्रभाव सीधा विद्यार्थियों के उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। शोधार्थी द्वारा अपने शोध समस्या के अन्तर्गत सामाजिक–आर्थिक स्थिति का उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन भी किया गया जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति मजबूत होने पर उन्हें अच्छे संसाधनों तथा अच्छी विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने के मौका प्राप्त होता है जिससे वे कुण्ठारहित एवं मानसिक तनाव से परे होकर शिक्षा प्राप्त करते हैं और अपने शैक्षिक उपलब्धि को उच्च बनाने की पूर्ण कोशिश करते हैं। अतः पूर्व अध्ययनों में भी पाया गया कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पायी जाती है जिसमें **नोबल किमवरले जी फरा जे0 एण्ड मैक कैन्डिल्स ब्रुस डी (2006)** ने अध्ययन के निष्कर्ष में इंगित किया कि– जिसमें इन्होंने सामाजिक आर्थिक स्तर तथा शब्द सम्बन्धी जागरूकता में धनात्मक सह सम्बन्ध पाया और

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 6.125 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 14, No. 3 Year - 14 March, 2023

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Dr. K.V. Ramana Murthy
Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, Website : shodhdrishti.com, Mob. 9415388337

৬	उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का उनके शैक्षिक एवं उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन **हरीश कुमार पाण्डेय एवं डॉ0 प्रमोद कुमार पाण्डेय**	193-198
৬	नारदभक्तिसूत्र में प्रेमानन्द स्वरूप विमर्श **शिव प्रसाद पाल**	199-203
৬	जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय प्रवासन की अवधारणा : बांग्लादेश के विशेष सन्दर्भ में **डॉ0 सचिन कुमार सिंह**	204-210

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 6.125
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 14, No. 3, March 2023 ISSN : 0976-6650

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का उनके शैक्षिक एवं उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन

हरीश कुमार पाण्डेय
शोध अध्येता, नागरिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंघई, जौनपुर (उ०प्र०)
डॉ० प्रमोद कुमार पाण्डेय
विभागाध्यक्ष (बी०एड०), नागरिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंघई, जौनपुर (उ०प्र०)

सारांश

ईश्वर की सर्वातिशय मनोरम कृति मानव है। मानव की विलक्षणता का आधार उसकी अपनी इच्छा शक्ति है। इच्छा के द्वारा ही वह अपनी वर्तमान स्थिति व परिस्थिति में नई–नई उपलब्धियों को हासिल करता रहता है। बालक जन्म से ही अपने साथ विभिन्न क्षमताओं को लेकर जन्म लेता है। धीरे–धीरे यही उसकी क्षमता किसी विशेष कार्यक्षेत्र में उभर कर विशिष्ट योग्यता को जन्म देती है। धीरे–धीरे उसकी योग्यताओं में विस्तार होता जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उसके भीतर कुछ विशेष प्राप्त करने की आकांक्षा जन्म लेती है और यही आकांक्षा उसे अपने निर्दिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति में उसे प्रेरित करती रहती है। यही प्रेरित अभिप्रेरणा उसकी शैक्षिक स्तर को और ऊंचा उठाती है तथा उसकी शैक्षिक स्तर की परिणति ही उसकी शैक्षिक उपलब्धि के रूप में दृष्टिगत होती है। आकांक्षा का बालक के शैक्षिक स्तर तथा उसकी शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह–संबंध पाया गया है। उच्च तथा सकारात्मक आकांक्षा द्वारा विद्यार्थी अपने शैक्षिक स्तर को बेहतर बना लेता है, जिसके परिणामस्वरूप उसका शैक्षिक उपलब्धि निम्न तथा नकारात्मक आकांक्षा वाले विद्यार्थियों की तुलना में उच्च होता है।

शब्द संक्षेप : उच्चतर माध्यमिक स्तर, आकांक्षा, आकांक्षा स्तर, शैक्षिक स्तर, उपलब्धि स्तर।

प्रस्तावना :

सृष्टा की सर्वोच्चतम कृति मानव है। जन्म के समय वह अंतःनिहित नैसर्गिक क्षमता से युक्त होता है। शिक्षा उस नैसर्गिक क्षमताओं को पहचान कर उसको विस्तार देने का कार्य करती है। परंतु इसमें सबसे महत्वपूर्ण कारक बालक की अपनी इच्छा शक्ति होती है। उसकी इच्छा शक्ति ही उसे उसकी स्थिति तथा परिस्थिति को निर्मित करने में सहायता प्रदान करती है तथा वातावरण के निर्माण में सहायक होती है। इच्छा शक्ति ही आकांक्षा है। जब बालक को किसी विशेष प्रकार की इच्छित वस्तु को प्राप्त करने की आकांक्षा होने लगती है तो वह उस निर्दिष्ट वस्तु की प्राप्ति के लिए अनेक प्रकार से प्रयत्न करने लगता है। यही प्रयत्न उसकी उस विषय क्षेत्र में उसे अव्वल बनाती है। जब यही आकांक्षा उसकी शैक्षिक क्षेत्र में बन जाती है तो वह शिक्षा के क्षेत्र में मेहनत और प्रयत्न करता है, जिसके परिणामस्वरूप उसके शैक्षिक स्तर में उत्रोत्तर वृद्धि होती जाती है, जिससे उसके शैक्षिक उपलब्धि भी बेहतर होती जाती है और वह किसी विशेष उपलब्धि को प्राप्त हो जाता है। इन सबके मध्य विद्यार्थी की सिर्फ अपनी आकांक्षा होती है। आकांक्षा ही वह अभिप्रेरित शक्ति है, जो उसे उसके लक्ष्य प्राप्ति में सहायक सिद्ध होती है।

आकांक्षा :

आकांक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। आकांक्षा के पर्यायवाची के रूप में इच्छा, महत्वाकांक्षा एवं लालसा आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। शाब्दिक अर्थ के अनुसार मनुष्य की समस्त चेष्टओं और भावनाओं के उद्‌गम करने की इनकी सूक्ष्म शक्ति का नाम ही इच्छा है। मानव की जागरूक चेतना ही इच्छा व आकांक्षा है, जो अपने एक रूप में मनुष्य में अपरिमित उत्साह भरकर उसे सक्रिय करती है। विद्यार्थियों के उत्साहहीन मन के द्वारा किया गया प्रयास असफल हो जाता है, इसलिए काम करने से पहले अभिप्रेरित वातावरण तैयार करना आवश्यक होता है, जिससे आकांक्षा को प्रोत्साहित किया जा सके। लक्ष्य या मूल्य आदि को प्राप्त करने की इच्छा भी आकांक्षा कहलाती है। आकांक्षा का अर्थ इच्छा से है। आकांक्षा से तात्पर्य सफलता की उस प्रत्यासा से है जिससे वह अपने निर्दिष्ट क्षेत्र में अपने पूर्व में निष्पादित उपलब्धि को ध्यान में रखते हुए आगामी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निर्धारित करता है।

आकांक्षा के प्रकार :

1. सकारात्मक एवं नकारात्मक आकांक्षाएँ, 2. वास्तविक एवं अवास्तविक आकांक्षाएँ, 3. तात्कालिक एवं दूरस्थ आकांक्षाएँ।

ISSN : 2229-3841
SJIF IMPACT FACTOR - 5.008

NATIONAL
Journal of Education

A Half-Yearly
Peer Reviewed Refereed
Educational Research Journal

Chief Editor
Dr. G. P. Mishra

December 2023 • Issue - 16 • Vol. 22

ISSN No. 2229-38415

Contents

1. **The Decline and Revival of Indian Handloom Textiles under BritishImperialism**— *Ratnesh Yadav* 1

2. **शिक्षक शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन**—*अजय कुमार गुप्ता* 17

3. **सामान्य विद्यालयों एवं मदरसों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों का एकतुलनात्मक अध्ययन**—*महविश बानो एवं डॉ. विद्यापति* 22

4. **पेरियार इरोड वेंकट नायकर रामास्वामी एवं डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन**—*विनोद एवं डॉ. प्रेम पाल सिंह* 29

5. **An Empirical Study of New Education Policy 2020 in TransformingHigher Education in India(With Special Reference to Sagar, Madhya Pradesh)**
—*Ms. Garima Dohar, Ms. Ankita Rajput,Dr. Gautam Prasad* 35

6. **जे. कृष्णमूर्ति के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का अध्ययन**
—*हर्षवर्धन सिंह* 44

7. **माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति केसमायोजन का एक अध्ययन**-*गणेश शंकर एवं डॉ. भगवान दीन* 48

8. **उच्च प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला शिक्षकों में व्यावसायिक कार्य सन्तुष्टता का तुलनात्मक अध्ययन**—*मोहित कुमार एवं डॉ. विवेक मिश्रा* 58

9. **डिजिटलीकरण ने सशक्त किया ग्रामीण शिक्षा का सफर**—*डॉ. मीतू सिंह* 62

10. **माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर : एक अध्ययन**— *डॉ. प्रतीक उपाध्याय एवं डॉ. विधु शेखर पाण्डेय*69

11. **Socail Intelligence : A Case Study of College Students of Prayagraj**
—*Atul Gurtu & Dr. Saroj Yadav* 76

12. **हिन्दी व्याकरण, शुद्ध लेखन एवं वाचन कौशल में विकसित स्व-अधिगमसामग्री के प्रति प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया काअध्ययन**-*कमलेंद्र नाथ त्रिपाठी* 81

13. **Empowering Minds, Safeguarding Networks : Integrating Cyberse Security Education to Combat Cybercrime in Educational Settings**- *Dr. Man Singh & Sushma Yadav* 88

14. **माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की मानसिक सजगता का तुलनात्मक अध्ययन**-*डॉ० माता प्रताप सिंह* 93

SJIF Impact Factor : 5.008 ISSN – 2229-3841

National Journal of Education

A Half-Yearly Peer Reviewed Refereed Educational Research Journal

December 2023 ● Issue : 16, Vol .: 22

हिन्दी व्याकरण, शुद्ध लेखन एवं वाचन कौशल में विकसित स्व-अधिगम सामग्री के प्रति प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया का अध्ययन

कमलेंद्र नाथ त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
आदित्य प्रकाष जालान टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज,
कुदलुम, नगड़ी, राँची

प्राथमिक कक्षाओं में वर्णों की पहचान और वर्णों को लिखना सिखाने पर केन्द्रित भाषा शिक्षण की कमी अनेक विद्यालयों में देखी जा रही है। बहुत ही कम विद्यालयों में देखने को मिलता है, जहाँ पर किया जाने वाला शैक्षणिक कार्य सही मायनों में बच्चों की भाषाई क्षमताओं के विकास में सहायता कर रहे हैं। भाषा शिक्षण की शुरूआत में सिर्फ वर्णों की पहचान और वर्णों को लिखना सिखाने पर केन्द्रित अभ्यास कार्य अधिकतर विद्यालयों में करवाए जाते हैं। भाषाई विकास के लिए बच्चों को ऐसे पर्याप्त मौके उपलब्ध नहीं हो पाते हैं जो उन्हें अपनी भाषा में सोचने, विचारने, कल्पना करने और विश्लेषण को बढ़ावा देते हैं। भाषा शिक्षण के वर्तमान परिदृश्य को समझने के लिए भाषा की दो कक्षाओं के दिए गए अवलोकनों को पढ़ते हैं व उन पर चर्चा करते हैं।

किसी भी विषय को सीखने–सिखाने के उद्देश्य सीधे इस बात से जुड़ते हैं कि हमारी उस विषय की समझ क्या है? विषय की समझ न केवल यह निश्चित करने में मदद करती है कि हमें पढ़ाना क्या है? वरन् यह भी निर्णय लेने में मदद करती है कि पढ़ाना कैसे है? 'भाषा क्या है'? इस प्रश्न की समझ सीमित है, यही समझ आमतौर पर भाषा सीखने–सिखाने के उद्देश्य माने जाते हैं –

- ध्वनि रूपों के शुद्ध उच्चारण को समझना।
- शब्दों के शुद्ध उच्चारण को समझना।
- ध्वनि रूपों का उच्चारण करना।
- शब्दों का शुद्ध उच्चारण करना।
- वर्ण पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- शब्द पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- वर्णों और शब्दों को उचित आकार, उचित क्रम में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विराम चिह्नों कर प्रयोग करते हुए लिखने की क्षमता विकसित करना।
- वाक्य पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- व्याकरण का सटीक उपयोग करना सिखाना।

ISSN 2582-1016, July-December 2023, 1
I2OR Impact Factor: 2.650
General Impact Factor: 2.1923

ISSN: 2582-1016 **July- December 2023**

ईशान् जर्नल ऑफ रिसर्च, नालेज एण्ड प्रूडेंस

ISHAN JOURNAL OF RESEARCH KNOWLEDGE & PRUDENCE
(A Peer-Reviewed Multidisciplinary International Research Journal)

अंक 10 (वर्ष 5) (मार्गशीर्ष–पौष) **Volume X (Year 5)** **Margashirsha-Paush**

कलियुगाब्द 5125, विक्रम संवत् 2080, ईसवी सन् 2023

Kali Yugābda 5125, Vikram Samvat 2080, i.e., CE 2023

Chief Patron
Dr. Balmukund Panday
National Organizing Secretary in Akhil Bhartiya Itihas Sankalan Yojana, New Delhi

Patron
Professor (Dr.) Alok Tripathi
Additional Director General, Archaeological Survey of India, New Delhi

ISSN 2582-1016, July-December 2023, 7
I2OR Impact Factor: 2.650
General Impact Factor: 2.1923

ISHAN JOURNAL OF RESEARCH KNOWLEDGE & PRUDENCE

Volume X (5) Margashirsha-Paush
Kali Yugābda 5125, Vikram Samvat 2080, i.e., CE 2023

अनुक्रमणिका

1.	वैदिककालीन उद्यमिता परिवेश (गिरिन्द्र मोहन ठाकुर, नारायण पालीवाल)	8
2.	हिन्दी व्याकरण, शुद्ध लेखन एवं वाचन कौशल में विकसित स्व–अधिगम सामग्री के प्रति प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया का अध्ययन (कमलेंद्र नाथ त्रिपाठी)	13
3.	श्रीमद्भगवद् गीता में वर्णित जीवन मूल्यों की शिक्षा में प्रासंगिकता : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के संदर्भ में (वागीश दूबे)	21
4.	प्रतापगढ़ की मलिन बस्तियों का अध्ययन (अनामिका सिंह)	28
5.	किशोर अपराध की समस्या का समाधान (अनामिका सिंह)	33
6.	IMPACT OF EMOTIONAL MATURITY ON EDUCATIONAL ACHIEVEMENT OF HIGHER SECONDARY SCHOOL STUDENTS IN RANCHI DISTRICT (Mrs. Dazy Lakra)	46
7.	व्यक्तित्व (PERSONALITY) (डॉ. रामकेश पाण्डेय)	63

ISSN 2582-1016, July-December 2023, 13
I2OR Impact Factor: 2.650
General Impact Factor: 2.1923

हिन्दी व्याकरण, शुद्ध लेखन एवं वाचन कौशल में विकसित स्व–अधिगम सामग्री के प्रति प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया का अध्ययन

कमलेंद्र नाथ त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
आदित्य प्रकाष जालान टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज,
कुदलुम, नगड़ी, राँची

प्राथमिक कक्षाओं में वर्णों की पहचान और वर्णों को लिखना सिखाने पर केन्द्रित भाषा षिक्षण की कमी अनेक विद्यालयों में देखी जा रही है। बहुत ही कम विद्यालयों में देखने को मिलता है, जहाँ पर किया जाने वाला शैक्षणिक कार्य सही मायनों में बच्चों की भाषाई क्षमताओं के विकास में सहायता कर रहे हैं। भाषा षिक्षण की शुरूआत में सिर्फ वर्णों की पहचान और वर्णों को लिखना सिखाने पर केन्द्रित अभ्यास कार्य अधिकतर विद्यालयों में करवाए जाते हैं। भाषाई विकास के लिए बच्चों को ऐसे पर्याप्त मौके उपलब्ध नहीं हो पाते हैं जो उन्हें अपनी भाषा में सोचने, विचारने, कल्पना करने और विष्लेषण को बढ़ावा देते हैं। भाषा षिक्षण के वर्तमान परिदृष्य को समझने के लिए भाषा की दो कक्षाओं के दिए गए अवलोकनों को पढ़ते हैं व उन पर चर्चा करते हैं।

किसी भी विषय को सीखने–सिखाने के उद्देष्य सीधे इस बात से जुड़ते हैं कि हमारी उस विषय की समझ क्या है? विषय की समझ न केवल यह निष्चित करने में मदद करती है कि हमें पढ़ाना क्या है? वरन् यह भी निर्णय लेने में मदद करती है कि पढ़ाना कैसे है? 'भाषा क्या है'? इस प्रष्न की समझ सीमित है, यही समझ आमतौर पर भाषा सीखने–सिखाने के उद्देष्य माने जाते हैं –

- ध्वनि रूपों के शुद्ध उच्चारण को समझना।
- शब्दों के शुद्ध उच्चारण को समझना।
- ध्वनि रूपों का उच्चारण करना।
- शब्दों का शुद्ध उच्चारण करना।
- वर्ण पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- शब्द पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- वर्णों और शब्दों को उचित आकार, उचित क्रम में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विराम चिह्नों कर प्रयोग करते हुए लिखने की क्षमता विकसित करना।
- वाक्य पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- व्याकरण का सटीक उपयोग करना सिखाना।
- नैतिक मूल्यों का विकास करना भी भाषा षिक्षण का उद्देष्य माना जाता है।

पाठ्यपुस्तक निर्माण और भाषा सीखने–सिखाने के तौर–तरीके भी इन्हीं उद्देष्यों पर आधारित होते हैं। फलस्वरूप भाषा की कक्षा सिर्फ वर्ण, शब्द, वाक्य बोलना, पढ़ना, लिखना सिखाने पर केन्द्रित होकर रह जाती है। न तो उसमें कविताओं व कहानियों के लिए कोई स्थान होता है न बच्चों को बातचीत करने के मौके होते हैं और न ही अपनी बात को अभिव्यक्त करने के। चाहे वह मन से लिखना हो अथवा कहना।

ISSN 2582-1016, July-December 2023, 21
I2OR Impact Factor: 2.650
General Impact Factor: 2.1923

श्रीमद्भगवद् गीता में वर्णित जीवन मूल्यों की शिक्षा में प्रासंगिकता : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के संदर्भ में

वागीश दुबे, असिस्टेंट प्रोफेसर
आदित्य प्रकाश जालान टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, कुदलुम, राँची

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की संकल्पना का आधार भारतीय ज्ञान परंपरा तथा पृष्ठभूमि भारतीयता है। चूंकि ज्ञान के प्रस्फुटन का प्रथम केंद्र बिंदु भारत है और मानवीय जीवन–मूल्यों की संकल्पना का आधार भारतीय चिंतन है और वेद, उपनिषद्, गीता, पुराण आदि उसके परिणाम। श्रीमद्भगवद् गीता सिर्फ एक आध्यात्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह मनुष्य मात्र के उत्थान एवं कल्याण का एक व्यावहारिक ग्रन्थ है। षिक्षा मनुष्य के निर्माण की आधारषिला है, परंतु श्रीमद्भगवद् गीता मनुष्य में मनुष्यता के गुणों के सृजन का एक दर्षन एवं प्रकाषपुंज है। भारत की उत्कृष्ट धार्मिक, सांस्कृतिक और जीवन मूल्यों को समझने का ऐतिहासिक–साहित्यिक साक्ष्य है। राष्ट्रीय षिक्षा नीति, 2020 संपूर्ण जन–मन के मन मानस के मूल चिन्तन की मौलिक अभिव्यक्ति है। राष्ट्रीय षिक्षा नीति 2020 की मूल अवधारणा श्रेष्ठ मानव का निर्माण एवं उसका विकास से है। वस्तुतः गीता मानव मूल्यों का अकूत भण्डार है। गीता ह्रदय में धारण करने योग्य महानतम् सीख है। गीता जीवन को पूर्णत्व की ओर ले जाने का साधन है। षिक्षा उसमें सहायता प्रदान करने की सर्वोत्तम साधन है। मनुष्य जीवन का संपूर्ण कृतित्व उसका जीवन दर्षन ही उसका जीवन मूल्य है। व्यक्ति जिस विचार को श्रेष्ठ मानता है उसी विचार के अनुरूप उसका व्यवहार हो जाता है।

शब्द संक्षेप : जीवन मूल्य, मूल्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, भगवद् गीता

प्रस्तावना :

सृष्टि की सर्वोत्कृष्ट रचना मानव है, जो अनादि काल से चिन्तनषील रहा है। वह अपनी चिन्तन शक्ति के फलस्वरूप अन्य प्राणियों से भिन्न है। जीव जगत के विकास के इतिहास में उसकी वर्तमान स्थिति उसके निज् विचारों की ही देन है। वैचारिक सम्पदा के कारण ही वह सृष्टि के चेतन–अचेतन तत्त्वों से लाभ लेने में सफल हुआ है। पशुओं के भी चक्षु आदि इंद्रियाँ होती हैं। वे उनसे ज्ञान भी प्राप्त करते हैं किंतु उनमें विचार करने की क्षमता विकसित नहीं होती है। इसलिए अल्पसत्त्व मनुष्य अति बल–संपन्न पशुओं को अपने हित साधन में नियोजित करता रहा है। वह अपने साथ–साथ मानवता के हित के प्रति भी सर्वथा समर्पित रहा है। मनुष्य का हित उसकी शांत एवं सुखद् जीवन–यात्रा की संपन्नता में निहित होती है। अंतः उन्नति से शांति प्राप्त होता है और बाह्य उन्नति से सुख प्राप्त होता है। मानव की अंतः उन्नति तथा बाह्य उन्नति की आवष्यकता ही क्रमषः जीवन मूल्यों की जननी है। जीवन मूल्यों को प्रायः मानवीय उत्थान की एक सन्दर्भिका के रूप में अवलोकित किया जाता है। किसी भी मानव की उन्नति के आकलन हेतु उसके द्वारा व्यतीत जीवन को देखा

ISSN 2582-1016, July-December 2023, 46
I2OR Impact Factor: 2.650
General Impact Factor: 2.1923

IMPACT OF EMOTIONAL MATURITY ON EDUCATIONAL ACHIEVEMENT OF HIGHER SECONDARY SCHOOL STUDENTS IN RANCHI DISTRICT

Mrs. Dazy Lakra

Assistant Professor ,

Aditya Prakash Jalan Teachers Training College, Ranchi (Ranchi University.)

ABSTRACT

Emotional maturity means being able to accept the reality of people and things as it is. Emotional maturity is very important aspect which directly affects the achievement of higher secondary school students. An emotionally mature adolescent if given more exposure and chance to develop can do better than others. It is the part of the education to provide opportunity to adolescents so that they can fully develop and enhance their capabilities. Adolescents having highemotional stability also have high educational achievement i.e. emotional maturity influenceseducational achievement of higher secondary school students.

Key words-EMOTIONAL MATURITY , EDUCATIONAL ACHIEVEMENT, HIGHER SECONDARY SCHOOL STUDENTS

1.0 Introduction -

Adolescence is the Latin word which means “TO GROW, TO MATURE”. It is themost crucial and significant period of an individual’s life due to rapid revolutionary changesin the physical, mental, moral, spiritual, sexual and social outlook of an individual.Adolescence is characterized by physical maturation of the brain and body, giving rise tointense psychological and physical changes. One primary class of psychological changetypical of adolescent’s is an intensification of emotional experience.

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 7.0 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 15, No. 2.1 Year - 15 February, 2024

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Dr. K.V. Ramana Murthy
Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, Website : shodhdrishti.com, Mob. 9415388337

↳	Impact of Digital Economy on Business Transformation with Special Reference to Dhanbad, Jharkhand **Dr. Pummy Kumari Das**	87-91
↳	To Study the Influence of Family Environment on Adjustment of the Class XI Students **Mohit Kumar Tiwari & Dr. Narendra Pandey**	92-96

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 7.0
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 15, No. 2.1, February 2024 ISSN : 0976-6650

To Study the Influence of Family Environment on Adjustment of the Class XI Students

Mohit Kumar Tiwari
Research Scholar, Dept. of Education, Magadh University, Bodhgaya, Bihar
Dr. Narendra Pandey
Research Supervisor
Associate Professor, Dept. of Education, Magadh University, Bodhgaya, Bihar

Abstract

Rapid changes and technological advancement, through cut competitions enhance the role of family environment with the relation to adjustment of the class XI students. The adjustment can be internal as well as external. Psychological adjustment as a field of study includes the study of the dynamics of adjustment pertaining to various aspects like academic performance, Home, Health, Social and Emotional.

Family environment is a very crucial area for a holistic development of a child. Adolescence age is a turning point of anyone's life and the adjustment with environment creates a big difference and it appears to influence other dimensions as Home, health, Social and Emotional adjustment. For the struggling students, however, Adjustment (Home, Health, Social and Emotional) is often a place that only serves to reinforce his already low self-esteem. In the scenario of India which is largest populated country of the world as a developing nation so many things of success depends upon adjustment with the environment to gain heights of life. It has also identified critical areas for the improvement of adjustment with the environment and coping strategies among students. This type of study can be considered as an important material for adjustment of adolescents to decide their future path in context of National Education Policy- 2020. In this connection the present study aims to find out the extent of Influence of family environment on student's adjustment of class XI students. The sample represents from Class XI students is used to collect data utilizing purposive sampling technique. The appropriate statistics is used and the study is descriptive in nature.

Keywords: Adjustment, Family Environment.

Introduction

Adjustment is a behavioral process by which one maintains equilibrium among various needs that one encounters at a given point of time. Almost every situation requires for adolescents' to perform action according to need of the various situations. Adjustment is defined as a process wherein one builds variations in the behaviour to achieve harmony with oneself, others or the environment with an aim to keep a balance between the individual and the environment. Adjustment mechanisms are used to handle difficult situations. These include aggression, compensation, identification, projection, rationalization, negativism, withdrawal, regression, repression and sublimation.

Family is a first informal agency for a child to learn the adjustment and face the challenges of life. It is very challenging phase of life for the adolescents to adjust with the various dimensions of adjustment i.e. Home Health, Social, Educational and Emotional.

Adjustment is life. Compromise is life. Adjustment and compromise is the attitude of life. It is the behavioural process through which living beings—humans and other animals—maintain a balance among their diverse needs, or between their needs and the obstacles to those needs. Every individual faces the problem of adapting to circumstances. When it is related to the adolescents the role of family environment is very crucial to face the challenges of 21st century.

MAH/MUL/ 03051/2012 **ISSN :2319 9318**

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

April To June 2024
Issue 50, Vol-01

Date of Publication
01 April 2024

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

INDEX

01) Empowering Women, Enabling Change: The Role of Initiatives like....
Dr. Parasram T. Bachewad, Chhatrapati Sambhajinagar || 10

02) A new species of Volutella from Amravati (Maharashtra)
P. S. Kaste, M.B. Bobade, Warud, Dist. Amravati (M.S.) ||13

03) To Study The Influence of Family Environment on Academic....
Mohit Kumar Tiwari, Dr. Narendra Pandey, Bodhgaya, Bihar ||14

04) Exploring the Relationship between Underemployment among Youths....
Sakshi Yadav, Dr. Ramjee Prasad, Kanpur ||18

05) Highlighting the Extracted Architectural Features of Gaur and....
Salim Ansari, Delhi ||22

06) THE IMPACT OF REMOTE WORK ON EMPLOYEES ENGAGEMENT....
E. C. SARANYA, Dr. R. BALAJI, Avadi, Chennai ||27

07) Surveying Financial Inclusion Initiatives in Rural India: A Comparative....
Sumiran Kumar Rajak, Sindri, Dist.- Dhanbad, Jharkhand ||32

08) A STUDY OF PUPIL TEACHER'S BELIEFS ABOUT TEACHING AND THEIR....
Dr. Vandana Sharma, Faridabad ||40

09) Cultural Odyssey: Amish Tripathi's Contribution to Modern Indian....
Dr. Dnyaneshwar S. Chavan, Mr. Vijay Krishnarao Shinde, Jalgaon ||43

10) INTEGRATED FARMING SYSTEM-A WAY TOWARDS SUSTAINABILITY OF....
Aman Kumar, kiran Singh, Prayagraj (U.P.) ||48

11) Empowering Women Through Food Processing startups : Opportunities....
Dr. C.S Joshi, Amit Kumar Tamta, Haldwani, Uttarakhand ||55

12) Women's Participation, Governance in India
Anowar Hoshein Mollah, West Bengal ||62

13) YOGA EDUCATION
Prof. Kiran Yerawar, Sonkhed Tq. Loha Dist, Nanded ||67

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Appl. 18 : 147 – 148.

Gupta, P.C. (1967) : Some addition to Indian soil fungi. Curr.Sci. 32 : 415.

Mukerji, K.G., Tewari, J.P. and Rai, J.N. (1968) :V.lini sp.nov. from India. Trans. Brit.Mycol.Soc. 51 : 337 – 339.

Rao, V.G. (1962) : Some new records of fungi-imperfecti from India. Annal Soc. Pernabuco. 37 :3 – 11.

Sarbhoy, A.K. (1967) : A new record of Volutella from India. Trans.Brit.Mycol.Soc.50 :156 – 157.

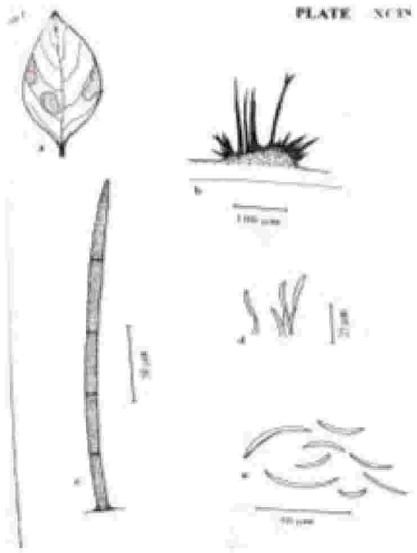

***Volutella citricola* sp.nov.**

a. habit on leaf
b. A sporodochium
c. A typical seta
d. Conidiophores with conidia
e. Conidia

❑❑❑

03

To Study The Influence of Family Environment on Academic Performance of the Class XI students

Mohit Kumar Tiwari
Research Scholar
Dept. of Education, Magadh University,
Bodhgaya Bihar

Dr. Narendra Pandey
Research Supervisor
Associate Professor
Dept. of Education, Magadh University,
Bodhgaya, Bihar

****

ABSTRACT :

Family environment is a very crucial area for a holistic development of a child. Adolescence age is a turning point of anyone's life and the family support and environment creates a big difference and it appears to influence school adjustment as well as academic performance. Families in general and parents in particular, have often been deemed to be the most important support system available to the child. The strongest factor in moulding a child's personality or behaviour is his relationship with his parents. Students who have struggled academically in most cases are at higher risk of school avoidance, and ultimately dropping out, than those who are successful. Ideally family is a first school for a child and nurtures to feel competent and successful, which breeds motivation and self-confidence. For the struggling students, however, Family is often a place that only serves to reinforce his already low self-esteem. In the